मिला मांसाहारी 'कंगारू' का जीवाश्म

सुंदरवन बंगाल टाइगर्स और नाना प्रकार की वनस्पतियों की वजह से जाना जाता है। पर्यटक और प्रकृति प्रेमी इसी वजह से यहां तक खिंचे चले आते हैं। लेकिन हाल ही में यहां मिले दुर्लभ किस्म के जीवाश्मों ने एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया का भी ध्यान खींचा है।

एएसआई के अधिकारियों के अनुसार ये जीवाश्म कुछ ऐसे जंगली जानवरों के हैं, जो अब अस्तित्व में नहीं हैं। विशेषज्ञों ने इन जीवाश्मों की तुलना क्षेत्र में पाए जाने वाले जंगली जानवरों से की है। इससे पता चला है कि इन जीवाश्मों और मौजूदा जंगली जानवरों के बीच कोई समानता नहीं है। यानी ये जीवाश्म ऐसे जानवर के हो सकते हैं जो काफी वर्ष पहले यहां रहा करते थे और समय के साथ उनका अस्तित्व खत्म हो गया। ये जीवाश्म सुंदरवन के गोसबा में उस समय मिले थे, जब पीडब्ल्यूडी के कर्मचारी एक तालाब बनाने के लिए इलाके में खुदाई करवा रहे थे। इसकी सूचना एएसआई को दी गई।

एएसआई के पूर्व एसोसिएट और एंथ्रोपोलॉजिस्ट बी.सी. रायचौधरी कहते हैं कि सदियों से सुंदरवन का इलाका विभिन्न प्रजातियों की शरणस्थली रहा है। कई जानवर यहां बाहर से आए और फिर यहीं बस गए। इनमें से कुछ धीरे-धीरे ओझल होते गए। वे कहते हैं, "मुझे पक्का विश्वास है कि जो जीवाश्म यहां प्राप्त हुए हैं, वे उन्हीं लुप्त जानवरों की बिरादरी में से किसी के होंगे।"

कुछ विशेषताओं की वजह से ये जीवाश्म अनूठे व दुर्लभ माने जा रहे हैं। ये जीवाश्म जिस जानवर के हैं, उसके अगले व पिछले पैरों की लंबाई में काफी अंतर है। पिछले पैरों की लंबाई करीब 20 इंच है, मगर अगले पैर केवल 9 इंच लंबे हैं। पसलियों की लंबाई करीब 20 इंच है तो दांत पांच इंच तक लंबे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार अगले पैर छोटे व पिछले पैर लंबे होने से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कंगारू जैसा कोई प्राणी रहा होगा। हालांकि दांतों के आकार, लंबाई और संरचना के परीक्षण के बाद विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यह जानवर मांसाहारी रहा होगा, जबकि कंगारू शाकाहारी होते हैं। पिछले लंबे पैरों का उपयोग वह शिकार को पकड़ने में करता होगा।

एएसआई के विशेषज्ञों के अनुसार ये जीवाश्म 300-400 साल पुराने हो सकते हैं। यानी ये जानवर 1600 से 1700 ईस्वीं के बीच सुंदरवन इलाके में घूमा करते होंगे।

अब तक जो भी जीवाश्म हासिल हुए हैं, उनमें पूरा शारीरिक ढांचा नहीं मिल पाया है। शरीर के अलग-अलग अगों के ही अलग-अलग जीवाश्म मिले हैं। इसलिए वैज्ञानिक केवल अनुमान ही लगा रहे हैं कि वह जानवर कैसा होगा। और जीवाश्मों की खोज के लिए व्यापक सर्वे का काम शुरू है। उम्मीद जताई जा रही है कि इस इलाके में और भी विलुप्त प्राणियों के जीवाश्म प्राप्त हो सकते हैं। अगर ऐसा होता है तो सुंदरवन के आकर्षण में एक चीज़ और जुड जाएगी। ***(स्रोत फीचर्स)***